3

साराह की बेटियां

वचन पाठः 1 पतरस 3:1-7

अब्राहम यदि विश्वासियों का पिता है (उत्पत्ति 17:5; रोमियों 4:11), तो साराह विश्वासियों की माता है (उत्पत्ति 17:16; यशायाह 51:2)। वह कसदियों के ऊर से लेकर प्रतिज्ञा किए हुए देश और उसके आगे तक हर कदम पर अब्राहम के साथ थी। स्वर्गदूतों के दिखाई देने पर उनके आतिथ्य सत्कार में वह अब्राहम के साथ सेवा कर रही थी (उत्पत्ति 18:6)। इब्रानियों की पत्री के लेखक के अनुसार, इसहाक का जन्म अब्राहम के विश्वास के साथ-साथ साराह के विश्वास का उतना ही परिणाम था: ''विश्वास से साराह ने आप बूढ़ी होने पर भी गर्भ धारण करने की सामर्थ पाई; क्योंकि उसने प्रतिज्ञा करने वाले को सच्चा जाना था'' (इब्रानियों 11:11)। अपने पति की तरह साराह का भी ''मूल विश्वास'' था।

पतरस की पहली पत्री में, विवाह के विषय पर आने पर प्रेरितों ने जब कुछ नियम बताने चाहे तो साराह का ही ध्यान उनके मन में आया था:

> और पूर्वकाल में पवित्र स्त्रियां भी, जो परमेश्वर पर आशा रखती थीं, अपने आप को इसी रीति से संवारती और अपने-अपने पति के आधीन रहती थीं। जैसे साराह अब्राहम की आज्ञा में रहती और उसे स्वामी कहती थी: सो तुम भी यदि भलाई करो, और किसी प्रकार के भय से भयभीत न हो तो उसकी बेटियां ठहरोगी (1 पतरस 3:5, 6)।

इस पाठ में हम ''साराह की बेटियों'' के गुणों पर विचार करेंगे।

हम विवाह और घर में महत्वपूर्ण विषय का अध्ययन कर रहे हैं। पहले कभी विवाह और घर के बारे में इतनी किताबें नहीं थीं, इसलिए विवाह की समस्या और बिखरे परिवारों की समस्या लोगों में पहले कभी नहीं थी। परिवारों को उस अनश्वर पुस्तक अर्थात बाइबल के पास जाने की आवश्यकता है। जब हमारे आदर्श वे लोग होंगे, जिनका मन इस संसार की बातों पर लगा है तो विनाश निश्चित है। पतरस ने अलग तरह का आदर्श बताया: साराह। हमारा पिछला पाठ पतियों और पिताओं के लिए था। इस पाठ में पत्नियों और माताओं अर्थात साराह की बेटियों के लिए चुनौती है। कई वर्षों में मुझे साराह की कई बेटियों को जानने का अवसर मिला है। 1 पतरस 3:1-7 से यह पाठ उन सबको श्रद्धांजलि है, जो पहले से साराह की बेटियां हैं और सब स्त्रियों को साराह जैसी बनने की सलाह है। साराह की बेटियों की चार खूबियां हैं, जिन पर हम विचार करेंगे।[1]

स्वेच्छा से आज्ञा मानने वाली हैं (3:1, 2, 46)

पहली बात, साराह की बेटियां प्रेम से, बल्कि अपने पति के मन को जीत कर उसके अधीन होने को तैयार रहती हैं। वचन के हमारे पाठ का आरम्भ होता है, ''हे पत्नियो, तुम भी अपने पति के आधीन रहो। इसलिए कि यदि इन में से कोई ऐसे हों, जो वचन को न मानते हों, तौभी तुम्हारे भय सहित पवित्र चाल-चलन को देखकर बिना वचन के अपनी-अपनी पत्नी के चाल-चलन[2] के द्वारा खिंच जाएं'' (आयतें 1, 2)।

''अधीन'' सैनिक शब्द का एक रूप है, जिसका अर्थ ''निचला पद'' है। ''तुम भी'' कुछ आयतें पहले दिए गए यीशु के उदारहण की बात हैं, जो परमेश्वर की इच्छा के आगे समर्पित होने को तैयार था:

> ... मसीह भी तुम्हारे लिए दुख उठाकर, तुम्हें एक आदर्श दे गया है, कि तुम भी उसके चिह्न पर चलो। न तो उसने पाप किया, और न उसके मुंह से छल की कोई बात निकली। वह गाली सुनकर गाली नहीं देता था, और दुख उठाकर किसी को भी धमकी नहीं देता था, पर अपने आप को सच्चे न्यायी के हाथ में सौंपता था (1 पतरस 2:21-23)।

जैसा कि पिछले पाठ में देखा गया था, अधीन होने का अर्थ किसी भी प्रकार एक का हीन और दूसरे का श्रेष्ठ होना नहीं है। (निश्चय ही, कोई नहीं मानेगा कि मसीह परमेश्वर से कम है।) वचन में यहां, पतरस ने ज़ोर दिया कि पति और पत्नी ''*दोनों* जीवन के वरदान के वारिस हैं'' (3:7; KJV); यानी किसी को एक-दूसरे से बढ़कर नहीं माना गया। अधीन होने का श्रेष्ठ या हीन होने से कोई सम्बन्ध नहीं है; यह तो परमेश्वर की इच्छा को पूरा करना है। हमें तो ''परमेश्वर की इच्छा'' का सम्मान करना है कि हम ''भले काम करने के द्वारा निर्बुद्धि लोगों की अज्ञानता की बातों को बन्द कर'' सकें (2:15)। यीशु की तरह, हमें इस विश्वास के साथ कि परमेश्वर हम से बेहतर जानता है, उसकी इच्छा के अधीन होना है।[4]

पतरस का पूरा विषय-वस्तु सताव ही था, जिसका उसने एक गैर मसीही अर्थात ''वचन को न मानने वाले'' पति से मसीही पत्नी के विवाह की परिस्थिति की कल्पना की-परन्तु पत्नी के अधीन होने का नियम हर विवाह में लागू होता है। उत्पत्ति 3 में परमेश्वर ने स्त्री को बताया था कि ''... तेरी लालसा तेरे पति की ओर होगी और वह तुझ पर प्रभुता करेगा'' (आयत 16)। नये नियम में बूढ़ी स्त्रियों को युवतियों को समझाने के लिए कहा गया है कि वे ''अपने-अपने पति के आधीन रहने वाली हों, ताकि परमेश्वर के वचन की निन्दा न होने पाए'' (तीतुस 2:5)। इफिसियों 5 और कुलुस्सियों 3 अध्याय में इस विषय पर हम पहले पौलुस की शिक्षा देख चुके हैं।

1 पतरस 3 में बताई गई अधीनता शरीर की ही नहीं, बल्कि मन की अधीनता का भी परिणाम है। आयत 2 ''सम्मानपूर्वक व्यवहार'' की बात करती है। आयत 4 ''शालीन और शान्त मन'' की बात करती है। यह समझाने के लिए कि वह कैसे मन की बात कर रहा था, पतरस ने साराह की ओर मुंह किया और कहा:

> और पूर्वकाल में पवित्र स्त्रियां भी, जो परमेश्वर पर आशा रखती थीं, अपने आपको इसी रीति से संवारती और अपने-अपने पति के अधीन रहती थीं। जैसे साराह अब्राहम की आज्ञा में रहती और उसे स्वामी कहती थी: सो तुम भी यदि भलाई करो और किसी प्रकार के भय से भयभीत न हो तो उसकी बेटियां ठहरोगी (आयतें 5, 6)।

पति को ''स्वामी'' या प्रभु कहने की बात, हो सकता है कि हम में से कइयों को चौंका दे, परन्तु साराह के समय में सम्मान के लिए इसी शब्द का इस्तेमाल किया जाता था। स्वर्गदूत की प्रतिज्ञा सुनकर कि वह पुत्र जनेगी, ''साराह मन में हंसकर कहने लगी, 'मैं तो बूढ़ी हूं, और मेरा पति भी बूढ़ा है, तो क्या मुझे यह सुख होगा' '' (उत्पत्ति 18:12)? 1 पतरस 3:6 में अनुवादित शब्द ''कहती थी'' मूल में वर्तमान कृदंत है, जो इस निरन्तर क्रिया का संकेत है। साराह अब्राहम को ''प्रभु'' कहती रहती थी।

क्या इसका अर्थ है कि साराह दुर्बल, सिकुड़ी हुई या बुज़दिल थी? क्या इसका अर्थ है कि उसका अपना दिमाग़ नहीं था और उसने अपना विचार या इच्छा कभी नहीं जताई? बिल्कुल नहीं। *ऑल द वुमेन ऑफ़ द बाइबल* में एडिथ डीन ने कहा है:

> साराह और अब्राहम में पाए जाने वाले सुन्दर भरोसे और सच्चे प्रेम का पता अब्राहम की अनुपस्थिति के समय अपने [उनके] घर पर उसके अधिकार से चल जाता है। वह उसे बराबर ही मानता था। उसने अपने आप को कभी इससे छोटी भूमिका के लिए नहीं दिया और न अब्राहम ने कभी उसे ऐसा करने को कहा।

डीन की बात को समझने के एक उदाहरण के लिए उत्पत्ति 21 अध्याय में चलते हैं। अब्राहम ने साराह के पुत्र इसहाक के दूध छुड़ाने के दिन बहुत बड़ा जश्न किया (आयत 8)। जश्न के दौरान साराह ने हाजरा से जन्मे अब्राहम के पुत्र इश्माएल को अपने पुत्र का मज़ाक उड़ाते देख लिया (आयत 9) जिससे वह बहुत परेशान हुई। अब्राहम को यह कहते हुए कि ''इस दासी को पुत्र सहित निकाल दे; क्योंकि इस दासी का पुत्र मेरे पुत्र इसहाक के साथ भागी नहीं होगा'' (आयत 10) उसका चेहरा लाल हो गया होगा। अब्राहम को उसका यह आग्रह पसंद नहीं था (आयत 11); परन्तु परमेश्वर के कहने पर उसने साराह के कहने के अनुसार ही किया (आयतें 12-14)।

साराह मज़बूत इरादे वाली स्त्री थी, परन्तु अपने परिवार के मुखिया के रूप में वह अब्राहम को ही चाहती थी। कोई आदमी तब तक अपने घर का सिर नहीं बन सकता, जब तक उसकी पत्नी न चाहे।

इस विषय को छोड़ कर आगे बढ़ने से पहले, पतरस की इस बात पर विचार कर लें कि अपने गैर मसीही पतियों के साथ ''जो वचन को न मानते हों'' मसीही पत्नियों का व्यवहार उन्हें बदल सकता है। KJV में ''वचन के बिना'' है, जिससे यह प्रभाव मिल सकता है कि उन्हें वचन के बिना भी जीता जा सकता है, परन्तु पतरस ने पहले मन परिवर्तन की प्रक्रिया में परमेश्वर के वचन के महत्व पर ज़ोर दिया था: ''तुमने ... सत्य के मानने से अपने मनों को

पवित्र किया है, ... क्योंकि तुमने नाशवान नहीं पर अविनाशी बीज से परमेश्वर के जीवते और सदा ठरहने वाले वचन के द्वारा नया जन्म पाया है'' (1 पतरस 1:22, 23)। मुक्ति के लिए परमेश्वर का वचन आवश्यक है।

वचन का प्रमाण ''वचन के बिना'' का समर्थन करता है। इसका अर्थ ''पत्नी की ओर से बिना वचन के'' हो सकता है, अन्य शब्दों में, अपने पति को मसीही बनने के लिए कहे बिना। ''वचन'' यहां परमेश्वर के वचन को कहा गया हो, या पत्नी की बात को, शिक्षा वही है। कालांतर में, पति ने चाहे परमेश्वर की प्रेरणा से दिए वचन को सुनने से इनकार कर दिया था, परन्तु उसके लिए आशा अभी भी थी, क्योंकि हो सकता है कि उसकी विश्वासी मसीही पत्नी के आदरणीय व्यवहार से उसका मन जीत लिया जाए। किसी ने कहा है कि ''बहस करने से मसीहियत को नहीं दिखाया जा सकता,''; ''जीवन होठों से कहीं बेहतर है।''

उनका पूरा सम्मान है (3:2-5)

दूसरा, साराह की बेटियों की पूरी और शुद्ध प्रतिष्ठा है। आयत 2 पत्नी के ''पवित्र चाल-चलन'' की बात करती है। NIV में ''अपनी पत्नियों की ... शुद्धता'' है। जवान पत्नियों को यह कहकर कि ''ऐसे ही जवान पुरुषों को भी समझाया कर कि संयमी हों'' (तीतुस 2:5), पौलुस ने ऐसे ही व्यवहार की बात की थी।

परतस ने समझाया कि ''पवित्र चाल-चलन'' से उसका क्या अर्थ था, मसीही पत्नियों से भड़कीले फैशनों से दूर रहने को कहते हुए: ''और तुम्हारा शृंगार दिखावटी न हो, अर्थात बाल गूंथने, और सोने के गहने, या भांति-भांति के कपड़े पहिनना'' (आयत 3)। यह संकेत देने के लिए कि पतरस के शब्द पूरी तरह से पाबन्दी के लिए थे, अनुवादकों ने NASB में "merely" शब्द जोड़ दिया।[10] परन्तु मूल वचन में " Let not [your] adorning be the outward plaiting [or braiding] of hair or putting on gold or clothing with garments."[11]

पतरस की बात को समझने के लिए यशायाह 3:16-25 पढ़ें, जिसमें प्रेरित की तीनों श्रेणियों अर्थात भड़कीले बाल बनाना, आभूषण और लिबास को समेटा गया है। यशायाह में ''शृंगार के सामान'' की प्रभावशाली सूची में ये चीज़ें शामिल थीं:

> ... घुंघुरूओं, जालियों, चंद्रहारों, झुमकों, कड़ों, घूंघटों, पगड़ियों, पैकरियों, पटुकों, सुगन्धपात्रों, गण्डों, अंगूठियों, नत्थों, सुन्दर वस्त्रों, कुर्तियों, चद्दरों, बटुओं, दर्पणों, मलमल के वस्त्रों, बुन्दियों, दुपट्टों ... (आयतें 18-23)।

पतरस की बातों की गहरी समझ पाने का एक और ढंग धनवान और प्रसिद्ध लोगों के कार्यक्रम की तस्वीरों वाली कोई पत्रिका देखना है, उसमें देखें कि उनमें से कइयों का लिबास कैसा है।

साराह की बेटियों की पहचान ऐसे फैशन नहीं हैं (रोमियों 12:2), बल्कि उन्हें शालीनता और मर्यादा में रहने वाली बताया गया है। उनके शृंगार का वर्णन इस प्रकार है:

> ... छिपा हुआ और गुप्त मनुष्यत्व, नम्रता और मन की दीनता की अविनाशी सजावट

> से सुसज्जित, क्योंकि परमेश्वर की दृष्टि में इसका मूल्य बड़ा है। और पूर्वकाल में पवित्र स्त्रियां भी, जो परमेश्वर पर आशा रखती थीं, अपने आप को इसी रीति से संवारती ... थीं (आयतें 4, 5; 1 तीमुथियुस 2:9, 10 भी देखें)।

इसका अर्थ यह नहीं है कि साराह की बेटियां शृंगार ही न करें। NASB के अनुवादों ने आयत 3 में समझाने की कोशिश की है, "And let not your adornment *merely* be external"[12] यानी तुम्हारा शृंगार केवल बाहरी न हो। ''साराह'' का अर्थ ''राजकुमारी'' है और *सचमुच* वह सुन्दरता और व्यवहार में राजकुमारी थी। अब्राहम जब मिस्र में गया था, ''तब मिस्रियों ने उसकी पत्नी [साराह] को देखा कि वह अति सुन्दर है'' (उत्पत्ति 12:14)। एडिथ डीन ने साराह का शब्द-चित्रण अपने पति के कारवां में सवारी करते किया है:

> इस तथ्य के अतिरिक्त कि वह ''देखने में अति सुन्दर''[13] थी, बाइबल बेशक कोई और बात नहीं बताती, परन्तु हम उसे बहुरंगा, शायद प्राचीन स्वामियों में प्रसिद्ध तीखे लाल और आसमानी नीला रंगों से मिला घाघरा पहने दिखा सकते हैं। उसके वस्त्र की सजावट माथे तक थी, जिससे माथे तक उसकी चुनरी आती थी, यह कल्पना करना आसान है कि उसके मोहक सुनहरे बाल, धूप में चमकती उसकी चोटी, कोमल जैतून जैसी त्वचा, गुलाबी होंठ और गाल, गहरी नीली आंखें जो उसके मुस्कुराने से चमकती थीं और रौबदार और मनोहर व्यक्तित्व।[14]

यह पढ़ने पर कि जब वह सत्तर के लगभग होगी तो मैं डीन की बात से सहमत हूं कि पुरषों को अभी भी वह आकर्षित करती होगी।[15]

यदि 1 पतरस 3:3-5 का अर्थ यह नहीं है कि साराह की बेटियां अपनी सुन्दरता का ध्यान न रखें तो फिर इसका क्या अर्थ है? इसका अर्थ है कि साराह की बेटियां अपने चरित्र को सजाने के लिए बनावट पर निर्भर नहीं हैं, बल्कि उनका चरित्र उनके बाहरी रूप को निखारता है। वे मर्यादा में रहकर चलती और बात करती हैं।

आयत 3 में ''शृंगार'' यूनानी भाषा के उसी शब्द का अनुवाद है, जिससे हमें अंग्रेज़ी का "cosmetics" शब्द मिला है। साराह की बेटियों को ''भीतरी'' कॉस्मैटिक्स से सजाया जाता है, जो किसी दुकान में नहीं मिल सकता![16]

वे अन्दर से सुन्दर हैं (3:3-6)

पतरस की बातों से साराह की बेटियों की तीसरी खूबी का सुझाव मिलता है कि उनकी सुन्दरता मन की है, जो मिट नहीं सकती।

''बाल गूंथना, और सोने के गहने, या भांति-भांति के कपड़े पहनने'' से शृंगार न करने के निर्देश में स्पष्टतया पूरी तरह से पाबन्दी नहीं है; वरना स्त्री के लिए कपड़े पहनना ही गलत होता, बल्कि यह आयत स्त्रियों के जीवनों में दिए जाने वाले *ज़ोर* से सम्बन्धित है।

साराह की बेटियां बाहरी के बजाय *भीतरी व्यक्तित्व पर ज़ोर* देती हैं। ''तुम्हारा शृंगार दिखावटी न हो ... वरन तुम्हारा छिपा हुआ गुप्त मनुष्यत्व नम्रता और मन की दीनता की अविनाशी सजावट से सुसज्जित रहे ...'' (आयतें 3, 4)। उन्हें इस बात की समझ है कि ''यहोवा का देखना मनुष्य का सा नहीं है; मनुष्य तो बाहर का रूप देखता है, परन्तु यहोवा की दृष्टि मन पर रहती है'' (1 शमूएल 16:7ख)।

अपनी ''नम्रता और मन की दीनता'' बढ़ाते हुए जिसका ''परमेश्वर की दृष्टि में मूल्य बड़ा है'' साराह की बेटियां *परमेश्वर को भाने पर ज़ोर देती हैं* (1 पतरस 3:4)। पूर्व काल की स्त्रियों की तरह उनकी आशा प्रभु में है (आयत 5)। साराह की तरह वे ''भलाई करने'' का प्रयास करती हैं (आयत 6)।

जब किसी स्त्री की प्राथमिकताएं शारीरिक के बजाय आत्मिक होगी तो इसके कम से कम दो परिणाम मिलेंगे। एक परिणाम तो आयत 6 के गूढ़ अर्थ वाले शब्दों में मिलता है: ''किसी प्रकार के भय से भयभीत न हो।''[17] इस आयत में ''भय'' के लिए दो शब्दों का इस्तेमाल हुआ है: पहला तो ''भय रखना'' के लिए सामान्य यूनानी शब्द से अनुवाद किया गया है। दूसरा, ''आतंकित होना'' के अर्थ वाले शब्द का संज्ञा रूप है। दूसरे शब्द का अर्थ सिकुड़ने, कंपकंपी वाले भय से है, जिससे व्यक्ति की हिम्मत टूट जाती है। मूलत: यह पद ''किसी आतंक से डरने'' की बात करता है।

यह दोहरा बल, यह कहने का ज़ोरदार ढंग है कि ''यदि तुम मेरे कहे अनुसार करती हो, तो तुम *किसी चीज़* से नहीं डरोगी।'' इस पत्र में पतरस के फोकस पर विचार करें तो वह कह रहा होगा, ''तुम्हें सताव से डरने की कोई आवश्यकता नहीं है।'' क्योंकि यदि हमारा ध्यान बाहरी पर न होकर भीतरी व्यक्तित्व पर होगा तो उनसे डरने की क्या आवश्यकता है, जो केवल ''शरीर को घात करते हैं, पर आत्मा को घात नहीं कर सकते'' (मत्ती 10:28) ? वह यह भी कह रहा हो सकता है कि ''विश्वास न करने वाले पति से तुम्हें डरने की कोई आवश्यकता नहीं है।''

उस विशेष परिस्थिति से आगे भी प्रासंगिकता बनाई जा सकती है, साराह की बेटियों को मालूम है कि परमेश्वर उनके साथ है, जिसके कारण वे कैसे भी हालात क्यों न हों, बिल्कुल नहीं डरतीं। वे भजनकार के साथ गा सकती हैं: ''यहोवा मेरी ओर है; ... मैं नहीं डरूंगी। कोई प्राणी मेरा क्या कर सकता है ?'' (भजन संहिता 118:6; भजन संहिता 56:4; इब्रानियों 13:6 भी देखें)।

किसी पत्नी और मां की प्राथमिकताएं शारीरिक के बजाय आत्मिक होने पर दूसरा परिणाम दिखाई देता है कि उसकी भीतरी सुन्दरता बढ़ती जाती है, जो उम्र के बढ़ने से कम नहीं होती, बल्कि बढ़ती जाती है। किसी ने कहा है कि दो माता-पिता अर्थात ''प्रकृति मां'' और ''समय पिता'' यह सुनिश्चित करेंगे कि हम बाहर ही से सुन्दर न रहें। लोशन-करीमें और मसाज[18] केवल इतना ही कर सकते यानी यदि हम जीवित रहें तो हमारी झुर्रियां और त्वचा का लटकना दूर कर सकते हैं।

साराह की बेटियों में वह अन्दरूनी सुन्दरता है, जिसका त्वचा के गोरा होने या मुलायम

रहने से कोई सम्बन्ध नहीं है। उनकी सुन्दरता बाहरी सजावट से नहीं बढ़ती, बल्कि यह तो ''छिपा हुआ और गुप्त मनुष्यत्व, नम्रता और मन की दीनता की अविनाशी सजावट से सुसज्जित है, क्योंकि परमेश्वर की दृष्टि में इसका मूल्य बड़ा है।पूर्वकाल में पवित्र स्त्रियां भी, जो परमेश्वर पर आशा रखती थीं, अपने आप को इसी रीति से सुन्दर बनाती थीं'' (1 पतरस 3:3-5क; NIV)।

उनका प्रेमपूर्वक सम्मान होता है (3:7)

अन्त में, वचन में यहां घोषित किया गया है कि साराह की बेटियों को प्रेमपूर्वक सम्मान दिया जाता है:[19] ''वैसे ही हे पतियो, तुम भी बुद्धिमानी से पत्नियों के साथ जीवन निर्वाह करो[20] और स्त्री को निर्बल पात्र जानकर उसका आदर करो, यह समझकर कि हम दोनों जीवन के वरदान के वारिस हैं, जिससे तुम्हारी प्रार्थनाएं रुक न जाएं'' (आयत 7)।[21] ''वैसे ही'' शब्द पर ध्यान दें, जिससे पतियों और पत्नियों को एक ही ढंग बताने का संकेत है। हर सुखी परिवार के लिए ''सुशील पत्नी'' और ''आदरणीय पति'' का होना आवश्यक है।

NASB में पति से ''उसे [अपनी पत्नी को] आदर'' देने को कहा गया है NIV में ''उनसे आदरपूर्वक रहें'' है NASB में यूनानी शब्द का अनुवाद "honor" है (KJV भी देखें), परन्तु इस शब्द में इससे बढ़कर और बहुत कुछ है। पिछले अध्याय में मसीह को ठुकराया हुआ पत्थर कहते, इसका इस्तेमाल किया गया है (2:6, 7;NASB, KJV, NIV)। पति होने के नाते हमें अपनी पत्नियों को बताना चाहिए कि हमारे लिए वे कितनी बहुमूल्य हैं!

''निर्बल पात्र'' वाक्यांश के बारे में भी कुछ कहना आवश्यक है, वरना कुछ लोग इसका अर्थ आदरणीय से कम होना निकाल सकते हैं। अपवाद हो सकते हैं, परन्तु आमतौर पर पति अपनी पत्नी से शक्तिशाली होता है[22] और इसी तथ्य का इस्तेमाल पतरस ने पतियों को यह समझाने के लिए किया कि पत्नियों की रक्षा और सम्भाल करना आवश्यक है। ''निर्बल'' शब्द का अर्थ ''व्यर्थ'' नहीं है। मेरा परिवार जब ओक्लाहोमा के सूर नामक स्थान में रहता था, तो मैं हर सुबह सूअरों को चारा डाला करता था। इस काम के लिए मैं पांच गैलन वाले एक टूटे हुए डिब्बे का इस्तेमाल करता था। बाद में उस डिब्बे को कोई बीस फुट दूर फैंक देता था। घर में मेरी मां के पास सजावटी बर्तन होते थे।

ऐसे फैंकने पर उन बर्तनों का कबाड़ा हो सकता था, वे इस ज़ंग लगे पांच गैलन केडिब्बे से ''कमज़ोर'' थे। इसके अलावा वे उससे कीमती भी थे। हम पतियों को अपनी पत्नियों को बताना चाहिए कि वे हमारे लिए कितनी मूल्यवान हैं। साराह सम्मानित और प्रिय थी और ऐसे ही उसकी बेटियां हैं। अपनी और बहुत-सी बेटियों की तरह, जो उसके जैसी हैं, साराह परमेश्वर के मार्ग में चलते हुए शारीरिक रूप से इसहाक में (भजन संहिता 127:3) और आत्मिक रूप से (1 पतरस 1:4) अपने पति के साथ ''जीवन के वरदान'' की ''वारिस'' थी। यह बात कि अब्राहम साराह से प्रेम रखता और उसका आदर करता था, उसके जीवन की कई घटनाओं में मिलती है। हाजरा के सम्बन्ध में उसने उसकी इच्छा के अनुसार किया (उत्पत्ति 16:6; उत्पत्ति 21:10, 14 भी देखें)। उसने कई अवसरों पर अपने

विशाल घराने की देखभाल के लिए उस पर भरोसा किया। जब 127[23] साल की उम्र में वह मर गई,[22] तो शोक करते हुए उसे मम्रे के अपने पसंदीदा पेड़ों के पास मकपेला वाली गुफ़ा में आदरपूर्वक दफ़ना दिया (उत्पत्ति 23:1-20)।

ऐसे ही आज साराह की बेटी आदरणीय और प्रिय होनी चाहिए। उसके पति को पता होना चाहिए कि उसे ''उत्तम पदार्थ'' मिला है ''और यहोवा का अनुग्रह उस पर हुआ है'' (नीतिवचन 18:22)। जब उसे वह आदर मिलता है, जो उसे मिलना चाहिए तो ''उसके पुत्र उठ-उठ कर उसको धन्य कहते हैं; उसका पति भी उठकर उसकी ऐसी प्रशंसा करता है'' (नीतिवचन 31:28)।

सारांश

इस पाठ का उद्देश्य पहले तो उन्हें सराहना है, जो साराह की बेटियां हैं। परमेश्वर साराह की हर बेटी को आशीष दे! आप अत्यन्त सुन्दर हैं और हम आप से प्रेम करते हैं। साथ ही, यह पाठ सब स्त्रियों को साराह की बेटियां बनने की सलाह भी है। क्या आप साराह की बेटी हैं? वचन यहां कह रहा है कि एक मसीही के रूप में ''*यदि* आप वह करती हैं जो सही है'' तो आप उसकी बेटी हैं? क्या आप भटकी हुई मसीही हैं, जिसे घर वापसी की आवश्यकता है? यदि आप ''जो सही है वह करने की'' योजना बना रही है तो कल की प्रतीक्षा न करें![24]

टिप्पणियां

[1]इस पूरी शृंखला में मुख्य नियमों, जैसे पुरुष की प्रधानगी, स्त्री की अधीनता और एक-दूसरे के आदर जैसे नियमों को बार-बार दोहराया जाएगा। इन नियमों से सम्बन्धित मूल सच्चाइयों को नज़रअन्दाज़ नहीं किया जा सकता, क्योंकि दोहराने से ही हम सीखते हैं। [2]KJV में "conversation" हैं। राजा जेम्स के समय में "conversation" (वार्तालाप) का वह अर्थ नहीं था, जो आज है। NKJV में "conduct" (आचरण) है। [3]फिलिप्पियों 2:5, 6. [4]चाहें तो आप इस विचार को विस्तार दे सकते हैं कि घर के लिए परमेश्वर की योजना बेहतरीन है: घर का केवल एक ही मुखिया पति होना चाहिए। एक उदाहरण: दो सिरों वाला जीव कोई अजूबा और बिना सिर के जीव मुर्दा है। [5]आपको चाहिए कि इफिसियों 5 और कुलुस्सियों 3 में पश्चात्ताप वाली आयतों पर विचार करें। [6]''स्वामी'' का अर्थ है ''मालिक, जिसके पास अधिकार है।'' पवित्र शास्त्र में, इस शब्द का अधिकतर इस्तेमाल परमेश्वर या यीशु के लिए ही होता है, परन्तु कई बार इसका इस्तेमाल अधिकार वाले पुरुषों के लिए होता है (मत्ती 18:25)। [7]अपने सुनने वालों को समझाने के लिए, जो भी शब्द आवश्यक हों, इस्तेमाल करें। जहां मैं रहता हूं, वहां हम पूछ सकते हैं, ''क्या इसका अर्थ यह है कि लुढ़कती हुई मर गई, यानी उसने अब्राहम को उसके साथ दरी की तरह व्यवहार करने को कहा?'' [8]एडिथ डीन, *ऑल द वुमैन ऑफ़ द बाइबल* (न्यू यार्क: हार्पर पब्लिशिंग कं., 1955), 10. [9]कोई आदमी बल और भय के माध्यम से अपने घराने पर रौब रख सकता है, परन्तु यह मुखिया या सिर नहीं होगा; यह तो तानाशाही है। [10]अगले मुख्य प्वाइंट के आरम्भ में इस आयत पर टिप्पणियां देखें।

[11]देखें KJV. [12]NASB के आरम्भिक संस्करणों में ''तुम्हारा शृंगार *केवल* बाहरी न हो'' था। [13]उत्पत्ति

12:11 (KJV)। [14]जीन, 10-11. [15]साराह अब्राहम से दस साल छोटी थी (उत्पत्ति 17:17)। हारान से निकलने के समय अब्राहम पचहत्तर वर्ष का था (उत्पत्ति 12:4); साराह पैंसठ वर्ष की होगी। कुछ देर बाद वे मिस्र में चले गए, जहां साराह की सुन्दरता के कारण फिरौन उसे अपने घर (यानी ज़नानखाने) में ले गया (उत्पत्ति 12:11, 14, 15)। तब वह अधिक नहीं तो सत्तर वर्ष की तो होगी ही। ऐसी ही एक घटना में, साराह जब लगभग नब्बे वर्ष की होगी, जब अबिमेलेक उसे अपने हरम (ज़नानखाने) में ले गया था (उत्पत्ति 20:2)। [16]कई जगह ''सौंदर्य की पाठशालाएं'' होती हैं, जहां पुरुषों व स्त्रियों को बाल काटना और ब्यूटीशियन बनना सिखाया जाता है और जहां स्त्रियां ''सुन्दर बनने'' के लिए जा सकती हों। परमेश्वर की ''सौंदर्य की पाठशाला'' का विवरण 1 पतरस 3:3-5 में दिया गया है। [17]KJV में है ''किसी आश्चर्य से डरती नहीं'' है। इसकी तुलना नीतिवचन 3:25 से करें। [18]संसार के कुछ भागों में इस सूची में कॉस्मैटिक सर्जरी (''फेसलिफ्ट'') जोड़ा जा सकता है। [19]टिप्पणी 1 में कहा गया था कि इस शृंखला में कुछ विषयों को दोहराया जाएगा। आदर के विषय से अधिक कोई नहीं दोहराया जाएगा, क्योंक मैंने आदर की आवश्यकता देखी है। अपनी आवश्यकता इस शृंखला का इस्तेमाल करने पर आप अपने सामान की आवश्यकता पर विचार करके प्रार्थना करें और पाठों को उसकी के अनुसार बदल लें। [20]KJV में है, ''उनके साथ समझदारी से रहें।'' पतियों को अपनी पत्नियों का *आमतौर पर* (अन्य शब्दों में, पता हो कि स्त्रियों की साधारण आवश्यकताएं क्या होती हैं) और *विशेषकर* (अपनी पत्नी की व्यक्तिगत आवश्यकताओं को जानना) आवश्यक है, हम पति लोग शायद अपनी पत्नियों को कभी पूरी तरह नहीं समझ पाएंगे, परन्तु कोशिश करना आवश्यक है। [21]कुछ लोगों को हैरानी है कि पत्नियों की ज़िम्मेदारी पर पतरस की टिप्पणियों के लिए छह आयतें ही क्यों हैं, जबकि पतियों को *ताड़ना* एक ही आयत में है। किसी मसखरे ने इस प्रश्न का उत्तर यह कहकर दिया था, ''क्योंकि पतियों के अपनी पत्नियों के साथ चलने की अपेक्षा पत्नियों के लिए अपने पतियों के साथ चलना छह गुणा कठिन है!'' इसका वास्तविक उत्तर बहुत आसान है कि इस भाग में पतरस गैर-मसीही पतियों से ब्याही गई मसीही पत्नियों की समस्या की बात कर रहा था (आयतें 1-6)। परन्तु उसने यह प्रभाव नहीं देना चाहा कि ज़िम्मेदारी केवल पत्नियों की ही है। इसलिए उसने ज़ोर देने के लिए कि पतियों की भी ज़िम्मेदारियां हैं, एक संक्षिप्त टिप्पणी जोड़ दी (आयत 7)। [22]यह आमतौर पर जीवन का माना हुआ सच है। ऐसा उदाहरण इस्तेमाल करें जो जहां आप रहते हैं वहां के लिए उपयुक्त और समझ आने योग्य हो। उदाहरण के लिए, जहां आप रहते हैं, वहां यदि लोग गोल्फ खेलते हैं तो आप ध्यान दे सकते हैं कि हर होल पर औरतों का हर टीला (निशाना लगाने की जगह) आदमियों के हर टीले से हरे के कई गज नज़दीक होता है। आप यह भी समझा सकते हैं कि ''निर्बल'' केवल ''मज़बूत'' शक्ति का संकेत है न कि बल या लम्बी आयु का। कई स्त्रियां, पुरुषों से अधिक घण्टे काम कर सकती हैं और करती भी हैं; फिर स्त्रियों की उम्र आमतौर पर पुरुषों की अपेक्षा अधिक होती है। [23]बाइबल में केवल साराह ही ऐसी स्त्री है, जिसके बारे में बताया गया है कि मरने के समय उसकी उम्र क्या थी। [24]अमेरिका में हाल ही के वर्षों में "makeover" शब्द काफी प्रसिद्ध हो गया। आमतौर पर इसका इस्तेमाल किसी महिला के अपने बालों का स्टाइल, मेकअप, कपड़े और दूसरी चीज़ें बदलने पर माहिरों द्वारा उसे विशेष सम्मान दिए जाने पर इस्तेमाल किया जाता है। यदि आपके सुनने वाले इस शब्द से परिचित हैं तो आप सुझाव दे सकते हैं कि कई लोगों को आत्मिक ''मेकओवर'' की आवश्यकता है।